हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम की स्तुति हो। यह परमेश्वर की कृपा है कि हमने एक और दिन देखा है, इसलिए मैं आपको पवित्र शास्त्र पर मनन करने के लिए आमंत्रित करता हूँ, क्योंकि वही हमारी आत्माओं का भोजन है।

हम में से बहुत से लोग अपने परमेश्वर से सहायता खोजते रहे हैं—और यह बहुत अच्छी बात है, क्योंकि ऐसा कोई अन्य स्थान नहीं है जहाँ हमें सच्ची सहायता मिल सके। शैतान का काम हमें नष्ट करना है, सहायता देना नहीं।

किसी भी परिस्थिति में जिससे आप गुजर रहे हों या जिसकी आपको आवश्यकता हो, परमेश्वर से सहायता पाने के कई मार्ग हैं।

पहला और सबसे महत्वपूर्ण मार्ग: व्यक्तिगत प्रार्थना

पहला और सबसे महत्वपूर्ण मार्ग है कि आप स्वयं घुटनों पर बैठकर परमेश्वर से प्रार्थना करें। यदि आज संसार में होने वाली सारी बुराइयाँ और पाप परमेश्वर तक पहुँचते हैं, तो हमारी प्रार्थनाएँ कितनी अधिक पहुँचती होंगी! हमारा परमेश्वर हर क्षण हमारे हृदय की धड़कन तक सुनता है; भोर में मुर्गे की बाँग

भी उसके पास पहुँचती है—तो हमारे मुख से निकलने वाले शब्द कितने अधिक!

इसलिए सबसे अच्छा मार्ग है कि आप व्यक्तिगत रूप से घुटने टेककर अपने हृदय की आवश्यकता परमेश्वर के सामने रखें, यह विश्वास करते हुए कि वह आपको सुनता है और यदि वह उसकी इच्छा के अनुसार है तो वह आपकी प्रार्थना का उत्तर देगा।

दूसरा मार्ग: परमेश्वर के सेवकों के द्वारा

दूसरा मार्ग, जो आज की शिक्षा का मुख्य विषय है, वह है परमेश्वर के सेवकों के द्वारा।

यह मार्ग पहले से बेहतर नहीं है, परन्तु यह एक वैध मार्ग है जिसे स्वयं परमेश्वर ने स्थापित किया है। जब आप किसी समस्या में हों या किसी परिस्थिति से गुजर रहे हों, तो सच्चे परमेश्वर के सेवकों को खोजें। प्रभु ने उन्हें ऐसी अनुग्रह दी है जो कहीं और नहीं मिलती। जब वे आपके लिए प्रार्थना करेंगे या आपको सलाह देंगे, तो सही उत्तर और परिणाम प्राप्त करना आसान हो जाएगा।

परमेश्वर के सेवकों को दी गई अनुग्रह के बारे में बहुत से पद हैं, पर आज हम निम्नलिखित पदों से सीखते हैं:

परमेश्वर से सहायता प्राप्त करने का एक तरीका

मरकुस 6:34–44
“यीशु ने उतरकर बड़ी भीड़ देखी और उन पर तरस खाया, क्योंकि
वे ऐसे भेड़ों के समान थे जिनका कोई चरवाहा नहीं होता; और वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा।
जब बहुत देर हो गई, तो उसके चेले उसके पास आकर कहने लगे, ‘यह स्थान सुनसान है और बहुत देर हो चुकी है। लोगों को विदा कर दीजिए ताकि वे आसपास के गाँवों और बस्तियों में जाकर अपने लिए कुछ खाने को खरीद लें।’
पर उसने उनसे कहा, ‘तुम ही उन्हें खाने को दो।’
उन्होंने उससे कहा, ‘क्या हम जाकर दो सौ दीनार की रोटी खरीदें और उन्हें खिलाएँ?’
उसने उनसे कहा, ‘तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? जाकर देखो।’ उन्होंने जानकर कहा, ‘पाँच, और दो मछलियाँ।’
तब उसने सब लोगों को हरी घास पर दल-दल करके बैठने की आज्ञा दी। वे सैकड़ों और पचास-पचास के समूहों में बैठ गए।
फिर उसने पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं, स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया, रोटियाँ तोड़ीं और चेलों को दीं कि वे लोगों में बाँटें; और दो मछलियाँ भी सब में बाँट दीं।
सब खाकर तृप्त हो गए, और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भर लीं।
खाने वालों की संख्या लगभग पाँच हजार पुरुष थी।”

इस वचन से सीखने योग्य बातें

1. प्रभु को भीड़ पर दया आई—पर उसने अपने चेलों का उपयोग किया

प्रभु ने भीड़ पर करुणा की, पर रोटियाँ स्वयं नहीं बाँटीं। इसके बजाय उसने चेलों से कहा कि वे लोगों को भोजन दें (पद 37 देखें)।

2. चमत्कार चेलों के हाथों में हुआ

आप देखेंगे कि चमत्कार प्रभु के हाथों में नहीं, बल्कि चेलों के हाथों में हुआ। यीशु ने धन्यवाद किया, पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ तोड़ीं और चेलों को दे दीं—उसने पाँच हजार रोटियाँ नहीं तोड़ीं। इसका अर्थ है कि चमत्कार चेलों के माध्यम से हुआ, सीधे यीशु के हाथों से नहीं।

संक्षेप में, यह चमत्कार प्रभु यीशु ने अपने प्रेरितों (अपने सेवकों) के हाथों के द्वारा किया। ऐसा नहीं कि प्रभु स्वयं नहीं कर सकते थे, बल्कि उसे अच्छा लगा कि वह अपने सेवकों के द्वारा अपनी योजना पूरी करे और जरूरतमंदों की सेवा करे।

जब आप किसी समस्या में हों तो क्या करें?

जब आप किसी कठिनाई में हों और समझ न पाएँ कि कहाँ से शुरू करें, तो पहले घुटने टेककर स्वयं परमेश्वर से प्रार्थना करें। यदि फिर भी आपको संदेह हो या लगे कि कुछ ठीक नहीं है, तो सच्चे परमेश्वर के सेवकों को खोजें। वे आपकी सहायता करेंगे, क्योंकि

प्रभु उनके द्वारा कार्य करता है। परमेश्वर ने अपने सेवकों को लगभग हर जगह रखा है, क्योंकि वह जानता है कि उसके बहुत से लोगों को सहायता की आवश्यकता है।

यदि आपको जीवन से संबंधित सलाह, आत्मिक मार्गदर्शन, बीमारी से चंगाई, या किसी भी बात में सहायता चाहिए, तो अपने पास्टर या बिशप के पास जाएँ और उनसे कुछ भी न छिपाएँ। जिस समस्या को आप सोचते हैं कि केवल आप ही झेल रहे हैं, संभव है बहुतों ने पहले झेली हो—और उसका समाधान भी हुआ हो। शैतान को आपको डराने न दें और यह कहने न दें कि यह असंभव है। कदम उठाइए, उनके पास जाइए, और विस्तार से समझाइए—जैसे आप अस्पताल में डॉक्टर को बताते हैं। ऐसा करने से सहायता जल्दी मिलती है, मानो स्वयं मसीह वहाँ आपकी सेवा कर रहे हों।

कृतज्ञ हृदय के साथ जाएँ

मैं आपको यह भी सलाह देता हूँ: खाली हाथ न जाएँ और इस सोच के साथ भी न जाएँ कि परमेश्वर का सेवक आपके पैसे का मोहताज है। ऐसे जाएँ जैसे आप स्वयं मसीह से मिलने जा रहे हों, और यह जानते हुए कि आप परमेश्वर का धन्यवाद किए बिना वापस नहीं लौट सकते। ऐसा करने पर आप महान परिणाम देखेंगे।

परमेश्वर के सेवकों के लिए एक संदेश

यदि आप परमेश्वर के सच्चे सेवक हैं, तो समस्याओं से घिरे लोगों पर दया करें, जैसे चेलों ने की—यहाँ तक कि उनकी बातों को मसीह के सामने रखा। यीशु के चेलों ने धन कमाने का अवसर नहीं देखा; उन्होंने लोगों की जरूरत देखी।

यद्यपि वे जानते थे कि लोगों के पास पैसे थे—इसीलिए उन्होंने कहा कि उन्हें जाकर भोजन खरीदने दिया जाए—फिर भी प्रेरितों को उनकी समस्याओं पर दया आई और उन्होंने उनके धन की इच्छा नहीं की। और कौन जानता है? शायद जब लोगों ने चमत्कार पाया और तृप्त हुए, तो उन्होंने भेंट दी हो। सामान्यतः जब कोई चंगाई या चमत्कार अनुभव करता है, तो उसका हृदय कुछ देने के लिए प्रेरित होता है।

परमेश्वर व्यवस्था का परमेश्वर है

हम यह भी सीखते हैं कि चेलों ने लोगों को व्यवस्थित समूहों में बैठाया—कुछ पचास के, कुछ सौ के। संभव है पुरुष, महिलाएँ, बुज़ुर्ग और बच्चे अलग-अलग बैठाए गए हों; सभी को एक साथ नहीं मिलाया गया।

यह परमेश्वर के सेवकों को सिखाता है कि लोगों की सेवा करते समय व्यवस्था होना आवश्यक है। हमारा परमेश्वर व्यवस्था का परमेश्वर है; जहाँ व्यवस्था नहीं होती, वहाँ परमेश्वर कार्य नहीं करता। व्यवस्था का अर्थ लोगों का सम्मान करना और अलग-अलग आयु समूहों के साथ उचित व्यवहार करना भी है। आप किसी बुज़ुर्ग

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

की सेवा वैसे नहीं कर सकते जैसे किसी बच्चे की, और न ही उनसे उसी तरह बात कर सकते हैं जैसे किसी युवा से। बुद्धि और सम्मान आवश्यक हैं—तभी प्रभु अपने चमत्कार प्रकट करेंगे।

1 कुरिन्थियों 14:40
“पर सब कुछ उचित रीति और व्यवस्था के साथ किया जाए।”

निष्कर्ष

तो आप परमेश्वर से सहायता किस प्रकार प्राप्त करेंगे? एक मार्ग उसके सेवकों के द्वारा भी है—केवल शारीरिक सहायता ही नहीं, बल्कि आत्मिक सहायता भी, जो कि परमेश्वर का वचन है।

प्रभु हमें आशीष दे।

कृपया इस शुभ समाचार को दूसरों के साथ साझा करें। यदि आप ईमेल या व्हाट्सएप के माध्यम से नियमित रूप से परमेश्वर के वचन की शिक्षाएँ प्राप्त करना चाहते हैं, तो इस नंबर पर संदेश भेजें: +255 789001312।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP

परमेश्वर से सहायता प्राप्त करने का एक तरीका

GROUP….

Share on:
WhatsApp